१

(राग - केदार)

गणराज गजानन गावाहो
राज गजानन (३) गावाहो ॥
विघ्नविनाशक बुद्धि प्रकाशक
तो वरदायक ध्यावा हो ॥
सिन्दूर चर्चित सोन्ड विराजित
मोदक हाथी पहावा हो ॥
आनन्दात्मज प्रार्थित से तुझ
हा भवसिन्धु तारा हो ॥